

नित्यमय (von नित्य) adj. aus Ewigem gebildet, — bestehend MBh. 12, 8948.

नित्ययौवन (नि० + यौ०) adj. ewig jung; f. श्री Bein. der Draupadi TRIK. 2, 8, 18. H. 710.

नित्यवत्स (नि० + व०) 1) adj. f. श्री beständig ein Kalb habend AV. 7, 104, 1. 9, 4, 21. — 2) f. श्री eine best. Sāman - Litanei LĀTJ. 7, 5, 3. 10, 2, 4. — 3) n. N. verschiedener Sāman Ind. St. 3, 221.

नित्यविव्रस्त (नि० + वि०) m. N. pr. einer Gazelle (in beständiger Angst sich befindend) HARIV. 1210.

नित्यवैकुण्ठ (नि० + वै०) m. Bez. eines bestimmten Sitzes Vishṇu's im Himmel BRAHMAVAIV-P. im ÇKDr.

नित्यशय (नि० + शय) adj. beständig schlafend MBh. 3, 10415.

नित्यशस् (von नित्य) adv. beständig, stets M. 2, 96. 4, 150. 7, 39. 10, 52. 12, 77. BHAG. 8, 14. N. 26, 14. 15. R. 1, 7, 2. 17, 38. 19, 20. 2, 28, 15. 3, 9, 13. SÜRJAS. 6, 8. PĀNĀT. II, 17. BHĀG. P. 3, 32, 30.

नित्यस्तोत्र (नि० + स्तो०) adj. beständig Lob empfangend RV. 9, 12, 7.

नित्यानन्दाश्रम (नित्य - आनन्द + आश्रम) m. N. pr. eines Scholiasten COLBR. Misc. Ess. I, 62, N.

नित्यायुक्त (नित्य + आयुक्त) m. N. pr. eines Bodhisattva LALIT. ed. Calc. 2, 13. नित्यायुक्त (sic) bei FOUCAUX; vgl. नित्योद्युक्त.

नित्यारित्र (नित्य + आरित्र) adj. eigene Ruder habend d. h. sich selbst rudernd: नौ RV. 1, 140, 12.

नित्योत्तिष्ठस्त (नित्य-उत्तिष्ठ + कृस्त) m. N. pr. eines Bodhisattva (der stets die Hand aufhebt) VJUTP. 22.

नित्योदित (नित्य + उदित) m. N. pr. eines Mannes KATHA. 21, 38.

नित्योद्युक्त (नित्य + उद्युक्त) m. N. pr. eines Bodhisattva Lot. de la b. I. 2. VJUTP. 22. — Vgl. नित्यायुक्त.

1. निद्र, निन्द, निन्दति DRĪTUP. 3, 28. निन्दात्: निन्दित्, अनिन्दिषुम्; निनिन्द, निनिन्द्य (Vop. 23, 9), निन्दिम, निनिन्दुस्; निन्दित्य Vop. 23, 10; partic. pass. निदान, निन्दित. Formen von निद्र kommen nur in der ältesten Sprache vor; im Epos auch med. verspotten, schmähen, verachten, schelten, tadeln, schimpfen auf: न निन्दिम चमसं यो म-
हाकुलः RV. 1, 161, 1. 5. 4, 3, 2. यो वः शमो शशमानस्य निन्दात् 5, 42, 10. 10, 27, 6. किं मां निन्दति शत्रवोऽनिन्द्राः 48, 7. AV. 2, 12, 6. निन्दा-
द्यो अस्मान्धिष्माञ्च VS. 11, 80. AIT. Br. 3, 23. अकतमकरिति वै निन्दति 2, 38. ÇAT. Br. 4, 1, 5, 10. प्रशंसति, निन्दति KĀTH. 34, 5. ये नः सत्ते अनि-
न्दिषुः LĀTJ. 3, 11, 3. (आदित्यम्) तपत् न निन्देत् KHĀND. Up. 2, 14, 2. अत्र न निन्द्यात् TAIT. Up. 3, 7. विकर्णं शंसमानानां सौबलं चापि निन्दताम् MBh. 2, 2275. निन्दति, अभिज्ञानति 1, 3328. निनिन्द, ननन्द R. 5, 11, 15. — BHART. 1, 37. 2, 81. RĀGA-TAR. 3, 211. BHĀG. P. 7, 10, 14. स निनिन्द किलात्मानं न तु तं लुब्धकं पुनः PĀNĀT. III, 171. निन्दतस्त्व सामर्थ्यम् BHAG. 2, 36. निन्दति स्वानि भाग्यानि ÇĀK. 126. स निनिन्दैकपुत्रताम् KATHA. 13, 61. VARĀH. BRH. S. 73, 15. RĀGA-TAR. 3, 80. med.: अनिन्द्यो नि-
न्दते योहि अग्रशयं प्रशंसति MBh. 3, 15229. 7, 2601. जीवितं निन्दते नि-
त्यं कुलं जन्म च R. 5, 34, 15. नाहं निन्दे न च स्तौमि स्वभावविषमं जन्म BHĀG. P. 7, 13, 42. pass.: निन्दमान RV. 6, 52, 3. निन्देहि यत्र निन्द्यते M. 8, 19. जीवति निन्द्यमानास्ते ÇOK. in LA. 42, 1. निदानं verspottet RV. 4, 3, 12 निन्दित gescholten, getadelt, mit einem Makel behaftet, verru-

fen, verboten (Gegens. प्रशस्त, पूजित, इष्ट) PĀNĀT. Br. 17, 2, 1. 2. KĀTJ. ÇR. 22, 4, 4. PĀR. GRHJ. 1, 11. M. 3, 42, 47. 165. 4, 157. 10, 46. 11, 44. 53. 64. 69. 182. JĀGĒ. 3, 219. VARĀH. BRH. S. 94, 2. BHATT. 6, 136; vgl. अनि-
न्दित.

— desid. zu verspotten Lust haben: यो ब्रह्मं क्रियमाणं निनिन्दताम् RV. 6, 32, 2. Zweifelhaft in der Stelle: अन्यान्वाभिज्ञानानिनिन्दसेत ÄÇV. ÇR. 9, 11.

— परि heftig schmähen. — tadeln: तच्चापि वाक्यं परिनिन्द्य MBh. 3, 40. ब्रह्म च ब्राह्मणाश्चैव यक्ष्यं परिनिन्द्य BHĀG. P. 4, 2, 30. Nach P. 8, 4, 33 und Vop. 8, 22 ist die Umwandlung des Anlauts in ण zulässig.

— प्र schelten: नो भूयः प्रणिन्द्य BHATT. 9, 106. Nach P. 8, 4, 33 und Vop. 8, 22 wäre auch प्रनिन्द्य richtig.

— प्रति tadeln, schmähen auf: तदा स्वबुद्धिं प्रतिनिन्दितासि MBh. 3, 15636. Die Calc. Ausg. trennt प्रति, was Beachtung verdient.

— वि tadeln, schmähen, schelten: विनिन्दन् स्वमात्मानम् MBh. 3, 13700. 6, 1796. 4476. 12, 5552. VP. bei Muir, Sanskrit Texts I, 63, Z. 2 in der N. BHĀG. P. 4, 2, 17. 14, 32. विनिन्देत्यं स धर्मज्ञः स्वयमात्मान-
मात्मना BRAHMA-P. in LA. 58, 12. med. MBh. 6, 1557.

2. निद्र (= 1. निद्र) f. Spott, Schmähung, Verachtung: ये त्वा निद्रं द-
धिरे दृष्टवीर्यम् RV. 2, 23, 14. न स्तोतारं निद्रं करः 3, 41, 6. 7, 73, 8. यया
निद्रा मुञ्चथं वन्दितारम् 2, 34, 15. 3, 16, 5. 7, 94, 3. 8, 67, 6. रता समस्य नो
निद्रः 9, 61, 30. concr. Spötter, Verächter: उत ब्रुवन्तु नो निद्रः 1, 4, 5. 129,
6. अतीयाम निद्रस्त्रिः स्वस्तिभिः 5, 33, 14. 6, 72, 1. तास्त्रायस्व हुक्ते
निद्रः 7, 16, 8. 9, 70, 10. निद्रं निद्रं पवमानं नि तोरिषः 79, 5. — Vgl. त्वा०,
देव०.

निद्र n. Gift ÇABDAK. im ÇKDr.

निद्राड (1. नि + द०) m. = निद्रितो दण्डः ein niedergelegter Stock P. 6, 2, 192, Sch. eher adj. der den Stock niedergelegt hat; vgl. न्यस्तद-
ण्ड unter दण्ड 12.

निद्रु m. Mensch ÇABDAK. im ÇKDr. Soll nach Wilson aus निद्र + रु
zusammengesetzt sein.

निदर्शक (von दर्श् mit नि) adj. 1) eine Einsicht habend in, schau-
end: ज्ञानतत्त्वयोः नित्यं प्रभाप्रभानिदर्शकः MBh. 12, 7846. मनस्त्वपहृतं
पूर्वमिन्द्रियार्थनिदर्शकम् । न समक्षगुणायैति निर्गुणस्य निदर्शकम् ॥ 7472.
13, 6617. — 2) anzeigend, verkündend: उत्कापाताश्च बह्वो महा-
भयनिदर्शकाः MBh. 3, 13086. वृत्तवर्तिष्यमाणानां कथाशानां निदर्शकः (वि-
ष्कम्भः) DAÇAR. 1, 53.

निदर्शन (wie eben) 1) adj. f. ई a) hinteudend auf, zeigend, ver-
kündend: त्रिवर्गार्थनिदर्शनः HARIV. 11421. 14090. यज्ञानमात्मतत्त्वनिद-
र्शनम् BHĀG. P. 2, 5, 1. एवं जन्मान्ययोरेतद्धर्माधर्मनिदर्शनम् (अन्ययोः d. i.
जन्मनोः der vorangegangenen und nachfolgenden) 6, 1, 47. दृश्यते विवि-
धोत्पाता घोरा घोरनिदर्शनाः HARIV. 12815. तस्मै नमः साध्यनिदर्शनाय
verkündend, lehrend BHĀG. P. 5, 18, 33. — b) zusagend, gefallend (?):
स तां बुद्धिं पुरस्कृत्य सर्वलोकानिदर्शनीम् R. 2, 108, 18. st. dessen विद-
र्शिनीम् R. GORR. 2, 116, 27. — 2) f. श्री Gleichnis: वाक्यार्थयोः सदृश-
योरैक्यारोपो निदर्शना KUYALAJ. 33, a. SĀH. D. 699. — 3) n. a) das Schauen,
Sehen: अन्धत्वाद्यदि तेषां तु न मे रूपनिदर्शनम् MBh. 9, 62. स्वप्न० Traum-
gesicht KHĀND. Up. 5, 2, 9. MBh. 1, 471. SUGR. 1, 8, 15. ० स्वप्ननिदर्शनीयम्-